अच्छा शिष्य ही अच्छा गुरु बन सकता है : युवाचार्यश्री महाश्रमण

लाडनूं, 6 मई।

युवाचार्यश्री महाश्रमणजी ने वर्तमान में शिक्षक और विद्यार्थियों के बीच हो रहे अशोभनीय व्यवहार को अनुचित ठहराते हुए कहा कि शिष्य और गुरु का एक पवित्र संबंध होता है। विद्यादान और विद्याअर्जन में गुरु शिष्य के बीच वात्सलय और विनय बना रहना चाहिए। जिससे गुरु और शिष्य की एकात्मकता का दर्शन स्पष्ट हो जाता है। गुरु का अपना कर्त्तव्य और शिष्य का अपना कर्त्तव्य होता है। गुरु का काम है दीक्षित करना ज्ञान देना और सदाचार के पथ पर शिष्य को अग्रसर करना और शिष्य में जहां कहीं त्रुटि लगे उसे सावधान करते रहना है तो शिष्य का फर्ज है गुरु की सेवा करना और गुरु के प्रति विनयपूर्वक व्यवहार करना है।''

वे जैन विश्व भारती के सुधर्मा सभा में उपस्थित श्रद्धालुओं को संबोधित कर रहे थे।

युवाचार्यप्रवर ने फरमाया कि शिष्य के लिए यह जरूरी है कि गुरु कठोरता का अनुशासन करे तो उसे सहन करना चाहिए। गुरु चाहे निर्मलता का अनुशासन करे चाहे कठोरता से अनुशासन करे वे शिष्य के लिए हितकर है ऐसा मानकर शिष्य को गुरु की बात को स्वीकार करनी चाहिए। गुरु की शिक्षा को अविनय के साथ ग्रहण नहीं करनी चाहिए। गुरु की सीख को समता भाव से सहन करना शिष्य का परम लक्ष्य होना चाहिए।

युवाचार्यप्रवर ने फरमाया कि जो मृदु, समझदार, विनीत शिष्य होते हैं वे तेज स्वभाव वाले गुरु को कभी गुस्से में नहीं आने देते हैं। जो शिष्य अपने धर्म को निभाता है गुरु के प्रति निष्ठा रखता है वह शिष्य हमेशा आगे बढ़ता है और आगे जाकर अच्छा शिष्य गुरु भी बन सकता है। जो स्वयं अच्छा शिष्य नहीं है वह कभी अच्छा गुरु नहीं बन सकता।

युवाचार्यश्री ने जयाचार्य और मघवागणी का उदाहरण देते हुए कहा कि जयाचार्य के पास मघवागणी विनीत शिष्य के रूप में रहे जयाचार्य की सेवा में रहे तो उनको अच्छा गुरु बनने का मौका मिला। कालूगणी को देखें तो वे मघवागणी, डालगणी, तीन आचार्यों के पास रहे एक समय वे एक अच्छे गुरु के रूप में सामने आए। इसी तरह आचार्य तुलसी बाईस वर्ष की अवस्था में आचार्य बने।

युवाचार्यप्रवर ने यह भी फरमाया कि गुरु और शिष्य अपने–अपने कर्त्तव्य को निभाएं। गुरु अपने छात्रों की चिंता करे कि उनके शिष्यों में ज्ञान का विकास होता रहे। शिक्षार्थी भी यह सोचे कि शिक्षक या गुरु के साथ अच्छा व्यवहार करूं। शिक्षक और शिक्षार्थी का गरिमापूर्ण व्यवहार होना चाहिए। ज्ञान देने वाले के प्रति कृतज्ञता का भाव होना चाहिए। एक अक्षर का भी कोई ज्ञान हमें देता है उसको हमें गुरु मान लेना चाहिए। जो व्यक्ति एक अक्षर देने वाले को गुरु नहीं मानता है वह कुत्ते की, चंडाल की योनी में पैदा होता है।

प्रवचन के पश्चात युवाचार्यश्री ने सहर्षभावों के साथ डालिम चरित्र का व्याख्यान किया।

इस अवसर पर लाडनूं के हंसराजजी चौरड़िया के स्वर्गवास पर उनके पारिवारिकजन पूज्यवरों से संबल प्राप्त करने उपस्थित हुए।